यौमे आशूरा को

अ़ेह्ल व इयाल पर खाने पीने में वुस्अ़त इख़्तियार करने के मुतअ़ल्लिक़ हदीष

(तेह्क़ीक़ व तख़रीज)

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्ड़ेशन
(अ़ेह्ले सुन्नत)

यौमे आशूरा
को
अ़हल व इयाल पर खाने पीने में वुस्अ़त इख़्तियार करने के मुतअ़ल्लिक़ हदीष

(तेहक़ीक़ व तख़रीज)

मुरत्तिब

ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी

डॉ. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर

इमाम जा’फ़र सादीक़ फाउन्ड़ेशन (अ़हले सुन्नत)

किताब का नाम : **यौमे आशूरा को अहल व इयाल पर खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने के मुतअल्लिक़ हदीष (तेहक़ीक़ व तख़रीज)**

मुरत्तिब : खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी : डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

सफ़हात : 26

सने ईशाअत : 2019

कम्पोज़िंग : **इमाम जा’फर सादिक फाउन्ड़ेशन(अहले सुन्नत)**, मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा’फ़र सादीक़ फाउन्ड़ेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

+91 85110 21786

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेश लफ्ज़

नवासिब की शुरु से यह कोशिश रही है कि वह अह्ले बैत अतहार से मुतअल्लिक हर चीज़ को **dilute** कर दें । फ़ज़ाइल की अहादीष को मौज़ूअ और ज़ईफ़ करार दें या उन की ऐसी तशरीह करें के उस इरशाद की अहमियत ही ख़त्म हो जाए ।

अब रोज़े आशूरा इमाम हुसैन ﷷ की शहादत की अहमियत को कम करने के लिए उस के झुटें फ़ज़ाइल गढ़ लिए गए हैं, इन्हीं में से एक मशहूर हदीष यह है के जो शख़्स रोज़े आशूरा अपने अह्ले व अयाल पर खाने में फ़राक़ी करेगा साल भर उसके रिज़्क में बरकत रहेगी । दर अस्ल नवासिब की ये कोशिश है के इस दिन को जो आले रसूल ﷺ के चाहने वालों के लिए क़यामत का दिन है, उसे रोज़े ईद में तब्दील कर दें।

माहे मुहर्रम के पहले जुम्आ में जब एक मशहूर ख़तीब ने इस हदीष को जुम्आ के खुतबे में पढ़ा तो मैंने उसी वक़्त नियत कर ली थी के इस हदीष की तेहक़ीक़ व तख़रीज़ पेश करूंगा । ये हदीष मौज़ूअ व बातिल है, खुदा की लानत हो उस पर जिस ने इसको घड़ा है । अल्लाह ﷻ मेरी इस कोशिश को कुबूल फ़रमाए । (आमीन)

तालिबे शफ़ाअते रसूल ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

Assistant Professor

Mechanical Engineering Department
A.M.U Aligarh

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ

عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

◆ तर्जमा: ऐ अल्लाह عزوجل रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा के तूने रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम عليه السلام पर और इब्राहीम عليه السلام की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लाइक और बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ

عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

◆ तर्जमा: ऐ अल्लाह عزوجل बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसी की बरकत नाज़िल फ़रमाई तूने इब्राहीम عليه السلام पर और इब्राहीम عليه السلام की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लाइक और बुज़ुर्गी वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

यौमे आशूरा को अहल व इयाल पर खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने के मुतअल्लिक़ हदीष

(तेहक़ीक़ व तख़रीज)

यौमे आशूरा की फ़ज़ीलत से मुतअल्लिक़ एक हदीष इन अलफाज़ के साथ बाज़ क़ुतुबे अहादीष में मिलती है :

"من وسع على عياله يوم عاشوراء وسع الله عليه سائر سنته".

◆ **तर्जमा: ''जिसने आशूरा (माहे मुहर्रम की दसवीं तारीख़) को अपने अहल व अयाल के लिए खाने पीने में वुसआत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे फराख़ी और वुसअत में रखेगा।''**

ये हदीष मुनदर्जा ज़ैल सहाबाए किराम رضی اللہ عنہم ने नबीए अकरम ﷺ से मरफ़ूअन बयान की है :

- सय्यिदना अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ
- सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ
- सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ
- सय्यिदना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ
- सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ
- इब्राहीम बिन मोहम्मद बिन मुंतशिशर رضی اللہ عنہ से बलाग़न बयान हुई है।

हदीष: सय्यिदना अबू सईद खुदरी ﷺ

→ इमाम तबरानी ﷺ ने "अल मुअजमुल औसत" (9/121,हदीष नंबर :9303) में, इमाम बैहक़ी ﷺ ने "शुअबुल ईमान" (7/377) में और हक़ीम तिरमिज़ी ﷺ ने "नवादिरुल उसूल" ये हदीष सय्यिदना अबू सईद खुदरी ﷺ से बयान की है। हकीम तिरमिज़ी ﷺ ने ये हदीष बग़ैर किसी सनद के बयान की है । अव्वलुज़्ज़िक्र दोनों मुहद्दिषीन ने इसे मुंदरजा ज़ैल के सनदों के साथ बयान किया है :

ثنا هاشم بن مرثد ، نا محمد بن إسماعيل الجعفری ، ثنا عبد الله بن سلمه الربعی ، عن محمد بن عبد الله بن عبد الرحمن بن أبی صعصعة ، عن أبيه ، عن أبی سعيد الخدری قال:قال رسول الله (من وسع على أهله فی يوم عاشوراء أوسع الله عليه سنته كلها .

◆ इमाम तबरानी ﷺ की सनद :

→ इमाम तबरनी ﷺ कहते हैं : सय्यिदना अबू सईद खुदरी ﷺ से ये हदीष सिर्फ़ इसी सनद से बयान की जाती है, इस सनद में एक रावी "मुहम्मद बिन इस्माइल जाफरी" इस रिवायत को बयान करने में तन्हा हैं ।

मुहम्मद बिन इस्माइल जाफरी के बारे में **इमाम अबू हातिम राज़ी** ﷺ "अल जर्राह वत्तअ" (7/189) में लिखते हैं : **वो मुन्किरुल हदीष है, इस पर लोग कलाम करते हैं,**

→ **इमाम इब्ने जौज़ी** ﷺ ने **"अज़्ज़अफ़ा"** (3/42) में, **इमाम ज़हबी** ﷺ ने **"मीज़ानुल ऐतिदाल"** (3/481) में **इसको ज़ईफ करार दिया है । हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी** ﷺ **"लिसानुल मीज़ान" (6/151) में लिखते हैं : ''इसको इमाम अबू हातिम** ﷺ **ने मुन्किरुल हदीष, और इमाम अबू नु'एम अस्फहानी** ﷺ **ने मतरूक कहा**

है।'' इब्ने हजर رحمه الله ने मजीद कहा है के इसका ज़िक्र **इब्ने हिब्बान** رحمه الله ने "सिक़ात" (9/88) में किया है और **ये कहा है वो अजीबो ग़रीब रिवायात बयान करता है ।**

◆ **इमाम बैहक़ी رحمه الله की सनद :**

→ इमाम बैहक़ी رحمه الله के यहाँ इस हदीष की सनद और मतन ये है :

أخبرنا علی بن احمد بن عبدان انا احمد بن عبيد الصفار نا ابن ابی الدنيا نا خالد بن خراش نا عبد الله بن نافع حدثنی ايوب بن سليمان بن مينا عن رجل عن ابی سعيد الخدری قال :قال رسول الله من وسع على أهله يوم عاشوراء وسع الله عليه سائر سنته .

इस सनद में अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से बयान करने वाला शख़्स मजहूल (ग़ैर मारूफ़) है ।

हदीष : सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه

अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه की हदीष **इमाम तबरानी** رحمه الله ने **"मुअजमुल कबीर"** (10/77,हदीष नंबर:10007)में, **इमाम बैहक़ी** رحمه الله ने **"शुअबुल ईमान"** (7/376-377) में और ख़तीब बग़दादी رحمه الله ने **"मौज़उल जमइ वत्तफ़रीक़ी"** (2/307) में मुंदरजा ज़ैल सनद और मतन के साथ रिवायत किया है :

الهيصم بن الشداخ عن الأعمش عن إبراهيم عن علقمة عن عبد الله عن النبی صلی الله عليه وسلم قال من وسع على عياله يوم عاشوراء لم يزل فی سعة سائر سنته.

इमाम बैहक़ी رحمه الله लिखते हैं के 'अअ्मश' से इस हदीष को रिवायत करने में 'हैसम' मुन्फरिद (अकेला) है । इमाम अकीली رحمه الله **"अज़्ज़अफ़ा"** (3/972) में अ़ली बिन मुहाजिर के तज़किरे में लिखते हैं : अ़ली बिन मुहाजिर ऐशी, हैसम बिन शदाख़ से रिवायत करता है और वो दोनों मजहूल (ग़ैर मारूफ़) है । ये हदीष ग़ैर महफ़ूज है और फिर

इस हदीष को मसनदन बयान करने के बाद लिखते हैं : इस सिलसिले में नबीए अकरम ﷺ से कूछ भी साबित नहीं है हाँ वो चीज़ ज़रूर साबित है जो इब्राहीम बिन मोहम्मद बिन मुन्तशिर से मुर्सलन बयान की जाती है। इमाम इब्ने हिब्बान رحمة الله "अल मजरुहीन" में लिखते हैं : हैसम बिन शदाख़, इमाम शैबा और इमाम अअ्मश से मनसूब कर के वाही तबाही रिवायतें बयान करता है, इसकी रिवायत करदा हदीष काबिले हुज्जत नहीं है। मिसाल में इब्ने हिब्बान رحمة الله ने अअ्मश से इसकी यही रिवायत पेश की है।

हदीष सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه

अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه की हदीष की रिवायत **इमाम दारक़ुतनी** رحمة الله ने की है जैसा की इब्ने जौज़ी رحمة الله की **"अल इललुल मुतनाहिय्या"** (62-63/2 अल तबअतुल हिंदीया) में और **"अतराफुल ग़राईब वल अफराद मिन हदीष रसूलुल्लाह लिल इमाम दारक़ुतनी"** (3/370) में है। **इब्ने हजर** رحمة الله ने **"लिसानुल मीज़ान"** (7/375) में "याक़ूब बिन ख़रह" के तर्जमा के ज़िमन में इसकी सनद इस तरह नक़्ल की है। **इब्ने हजर** رحمة الله लिखते हैं : इमाम **दारक़ुतनी** رحمة الله **"अतराफुल ग़राईब वल अफराद मिन हदीष रसूलुल्लाह लिल इमाम दारक़ुतनी"** में बयान करते हैं :

حدثنا محمد بن موسى ثنا يعقوب بن خرة الدبا غ ثنا سفيان بن عيينة عن الزهرى عن سالم عن أبيه رضى الله عنه قال :قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من وسع على عياله يوم عاشوراء وسع الله عليه سائر سنته.

→ **दारक़ुतनी** رحمة الله **कहते हैं कि ये हदीष मुन्कर है और ज़हरी की हदीष में से है।**

"अतराफुल ग़राईब" में है : सालिम की अपने बाप से ये रिवायत ग़रीब है। ये इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन मुन्तशिर के क़ौल के तौर पर मन्कूल (नक्ल कर्दा रिवायत) है।

याक़ूब बिन ख़रह दब्बाग़ ज़ईफ है। **इब्ने हजर** رحمة الله **"लिसानुल मीज़ान" में लिखते हैं : सूफ़ियान बिन उययना से याक़ूब बिन ख़रह की रिवायत को इमाम दारक़ुतनी** رحمة الله

ने ज़ईफ बताया है लेकिन मैं कहता हूँ कि ये उनका वहम है, वो झूठी हदीष बयान करता है।

"अल मुतालिफ वल मुख़्तलिफ़" में **इमाम दारकुतनी** ﷬ लिखते हैं : याक़ूब बिन खरह अहले फारस का एक शैख़ है जो अज़हर बिन साअद समान और सूफ़ियान बिन उययना से रिवायत बयान करता है लेकिन वो हदीष के मुआमले में क़वी नहीं है।

हदीष: सय्यिदना अबू हुरैरा ؓ

इस सिलसिले में अबू हुरैरा ؓ से मरवी हदीष की तख़रीज **इमाम बैहक़ी** ﷬ ने **"शुअबुल ईमान"** में और अबू नु'एम ﷬ ने **"अख़बार अस्बहान"** (1/198) में की है।

◆ **इमाम बैहक़ी ﷬ की सनद :**

→ इमाम बैहक़ी ﷬ के यहाँ इस हदीष की सनद और मतन ये है:

أخبرنا ابو سعد المالينى انا ابو احمد بن على نا الحسين بن على الأهوازى نا معمر بن سهل نا حجاج بن نصير نا محمد بن ذكوان عن يعلى بن حكيم عن سليمان بن أبى عبد الله عن أبى هريرة أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من وسع على عياله وأهله يوم عاشوراء وسع الله عليه سائر سنته.

इमाम अक़ीली ﷬ फ़रमाते हैं: इस सनद में सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह **नाम का रावी मजहूल (नामालूम) है।**

हदीष: सय्यिदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह ؓ

जाबिर बिन अब्दुलाह ؓ की हदीष **इमाम बैहक़ी** ﷬ ने **"शुअबुल ईमान"** (7/375) में नक़्ल की है।

→ इस हदीष कि सनद और मतन मुंदरजा ज़ैल है :

أخبرنا علي بن احمد بن عبدان ، انا احمد بن عبيد ، نا محمد بن يونس ، نا عبد الله بن ابراهيم الغفاری ، نا عبد الله بن ابی بكر ابن اخی محمد بن المنكدر ، عن جابر قال :قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من وسع على أهله يوم عاشوراء وسع الله على اهله طول سنته .

इमाम बैहक़ी ﷫ कहते हैं कि यह सनद ज़ईफ है।

◆ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन मुन्तशिर की बलागी रिवायत :

इस को इब्ने मुईन ﷫ ने अपनी तारीख़ (2223) में दूरी की रिवायत के तौर पर नक़्ल किया है, बैहकी ﷫ ने इसे **"शुअबुल ईमान"** (7/379) में नक़्ल किया है और अबू नु'एम ﷫ ने **"अख़बार अस्बहान"** (2/163, अत्तबअतुल हिंदीय्या, व तबअतु दारिल कुतुबिल इल्मिय्या, 2/132) में रिवायत किया है । इस रिवायत की सनद मअमतन मुंदरजा ज़ैल है :

ثنا العباس ، ثنا شاذان ، ثنا جعفر الأحمر عن إبراهيم بن محمد بن المنتشر قال كان يقال من وسع على عياله يوم عاشوراء لم يزالوا في سعة من رزقهم سائر سنتهم.

इस रिवायत को इमाम बैहक़ी ﷫ ने अब्बास की सनद से रिवायत किया है ।

◆ इस रिवायत को ज़ईफ कहने वाले अह्ले इल्म :

→ **"मसाइल इब्ने हानी लिल इमाम अहमद"** (1/136-137) में मज़कूर है कि मैं ने अबू अब्दुल्लाह से पूछा : क्या आप ने ऐसी हदीष सुनी है जिस में आया है कि जो

आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के खाने पीने में वुसअत करेगा, अल्लाह ﷻ पूरे साल उस के खाने पीने में वुसअत रखेगा ?

उन्हों ने जवाब दिया : हाँ इस तरह की हदीष सूफ़ियान ने जाफ़र अहमर से और उन्हों ने इब्राहीम बिन मुन्तशिर से नक़्ल की है।

सूफ़ियान कहते हैं: हमारी राय में ज़ियादा सहीह बात यह है कि यह रिवायत **"من وسع على عياله في يوم عاشوراء وسع الله عليه سائر سنته"** इस की बलाग़त में से है। इब्ने उययना कहते हैं कि मैं ने पचास या साठ साल से इस का तजुर्बा किया है और इस में भलाई ही देखी है। इस के बाद सूफ़ियान कहते हैं : इब्ने उययना, इब्ने मुन्तशिर की तारीफ़ में मुबालग़ा आराई से काम लेते थे, फिर मुझ से कहा : **इस की सनद में ज़ो'फ़ है।**

→ उन्हों ने (सूफियान) **"नक़्दुल मन्क़ूल वल महकमुल मुमय्यीज़ बयनल मरदूदि वल मक़्बूलि" में लिखा है :**

"फसल : आशूरा की अहादीष : इन में वह अहादीष भी हैं जिन में आशूरा के दिन सुर्मा लगाने, ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करने, खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने और इस दिन नमाज़ पढ़ने वग़ैरह का ज़िक्र आया है लेकिन इन में से कोई एक फ़ज़ीलत सहीह सनद से साबित नहीं और न इस मौज़ू की कोई हदीष सहीह है, नबी ﷺ से इस का सबूत नहीं मिलता। आशूरा के रोज़े के मुताल्लिक़ अहादीष सहीह हैं, बाक़ी सब बातिल हैं, इन बातिल अहादीष में नुमायाँ तौर पर वह हदीष है जिस में आशूरा के दिन खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने का ज़िक्र किया गया है।"

→ **इमाम अहमद बिन हम्बल رحمه الله फ़रमाते हैं : यह हदीष सहीह नहीं।**

→ इब्ने तैमिया **"मजमूअ अल फ़तावा"** (25/313) में लिखते हैं :

→ **हर्ब किरमानी** अपने "मसाइल" में कहते हैं कि इमाम अहमद बिन हम्बल رحمه الله से इस हदीष के बारे में सवाल किया गया तो उन्हों ने फ़रमाया : **मैं इस को कुछ नहीं**

समझता । इस सिलसिले में सब से आला वह असर है जो लोग इब्राहीम बिन मोहम्मद बिन मुन्तशिर से बयान करते हैं, वह कहते हैं कि हमें यह ख़बर पहुंची है कि जो शख़्स आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल पर खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करेगा, अल्लाह ﷻ साल भर उसे वुसअत में रखेगा । सूफ़ियान बिन उययना कहते हैं कि हम ने साठ साल तक इस का तजुर्बा किया है तो इसे दुरुस्त पाया है । **इब्राहीम बिन मोहम्मद कूफ़ा का रहने वाला था, उस ने यह नहीं बताया है कि इस को किस से सुना है और न यह बताया है कि उसे यह हदीष किस से पहुंची है । शायद यह बात उन अहले बिदअत ने कही है जो सय्यिदना अ़ली ؓ और उन के असहाब से बुग्ज़ रखते थे । वह एक झूठ का सहारा ले कर रवाफ़िज़ का मुक़ाबला करना चाहते थे ।** यह तो फ़ासिद का मुक़ाबला फ़ासिद से करने जैसा है । रहा इब्ने उययना का क़ौल, तो उस में कोई दलील नहीं है । अल्लाह ﷻ ने उन पर अपनी रोज़ी का इनआम किया, अल्लाह ﷻ के इस इनआम का यह मतलब नहीं कि वह आशूरा के दिन अहल व अयाल पर वुसअत इख़्तियार करने की वजह से मिला है । अल्लाह ﷻ ने उन मुहाजिरीन और और अनसार पर भी रोज़ी में वुसअत अता की थी जो मख़लूक़ में सब से अफ़ज़ल थे, फिर भी वह खास तौर पर आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल की इस क़िस्म की कोई वुसअत इख़्तियार नहीं करते थे ।

→ **इब्ने क़य्यिम ؒ "अल मनारुल मुनीफ़" (89) में लिखते हैं :**

इन में वह अहादीष भी हैं जिन में आशूरा के दिन सुर्मा लगाने, ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करने, खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने, और इस दिन नमाज़ पढ़ने वग़ैरह का ज़िक्र आया है लेकिन इन में से कोई एक फ़ज़ीलत सहीह सनद से साबित नहीं और न इस मौज़ू की कोई हदीष सहीह है, नबी ﷺ से इस का सबूत नहीं मिलता । आशूरा के रोज़े के मुतअल्लिक़ अहादीष सहीह हैं, बाक़ी सब बातिल हैं, इन बातिल अहादीष में नुमायाँ तौर पर वह हदीष है जिस में आशूरा के दिन खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करने का ज़िक्र किया गया है ।" इमाम अहमद ؒ फ़रमाते हैं : यह हदीष सहीह नहीं है ।"

ज़ेरे बहस हदीष के मराजिय और अहले इल्म के इस पर तबसिरे एक नज़र में

1 من وسَّعَ على عيالِهِ يومَ عاشوراءَ وَسَّعَ اللّٰهُ عليهِ سائرَ سَنتِهِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

غير محفوظ فلا يثبت هذا عن رسول الله صلى الله عليه وسلم في حديث مسند

→ यह रिवायत इमाम अक़ीली ﷫ ने "अल इललुल मुतनाहीया" (2/553) में नक़्ल की है। हदीष के रावी सय्यिदना अबू हुरैरा ﷛ हैं। मुहद्दीष ने इस रिवायत पर यह तबसिरा किया है :

◆ तर्जमा : **"यह रिवायत ग़ैर महफ़ूज़ है, यह बात रसूलुल्लाह ﷺ से किसी सहीह हदीष से साबित नहीं है।"**

2 مَن وسَّع على عيالِه يومَ عاشوراءَ وَسَّع اللهُ عليه سائرَ سَنَتِه

◆ **तर्जमा: "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पुरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"**

→ यह रिवायत इब्ने अदी ﷫ ने **"अल कामिल फ़ीज़्ज़ुअफ़ाअ"** (6/361) में नक़्ल की है। हदीष के रावी सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷛ हैं। मुहद्दीष ने इस रिवायत पर यह तबसिरा किया है :

بهذا الإسناد لا أعلم يرويه غير علي بن أبي طالب البزاز القرشي

◆ **तर्जमा : “मुझे नहीं मालूम के इस सनद से यह रिवायत अ़ली बिन अबी तालिब से बज़ाज़ कर्शी के अलावा किसी दूसरे ने भी रिवायत की है।”**

3 من وسَّعَ على عيالِهِ يومَ عاشوراء وَسَّعَ اللّٰهُ عليهِ سائرَ سَنتِهِ .

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिये वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पुरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह रिवायत दारक़ुतनी رحمة الله ने “अतराफुल ग़राईब वल अफराद मिन हदीष रसूलुल्लाह लिल इमाम दारकुतनी” (3/370) में नक़्ल की है। हदीष के रावी सय्यिदना इब्ने उ़मर رضی الله हैं। मुहद्दीष ने इस रिवायत को मुन्कर क़रार दिया है।

4 مَنْ وَسَّعَ على عِيَالِهِ يومَ عاشُوراءَ، وسَّعَ اللهُ عليهِ سائرَ سَنَتِهِ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।” यह रिवायत **“लिसानुल मीज़ान”** (8/530) में है, अब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی الله से मरवी है। **दारक़ुतनी** رحمة الله **ने इसे ज़हरी की हदीष से मुन्कर क़रार दिया है।**

5 من وسَّع على عيالِهِ يومَ عاشوراء وَسَّع اللهُ عليه في سائرِ سنتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम बैहक़ी رحمة الله ने “शुअबुल ईमान” (3/1390) में **अब्दुल्लाह बिन मसऊद से नक़्ल की है। बैहक़ी** رحمة الله **ने कहा है कि इस रिवायत को बयान करने में हैसम मुन्फ़रिद (अकेला) है और इस के अंदर हदीष के सिलसिले में कुव्वत पाई जाती है।**

6 من وسَّع على عيالِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه سائرَ سنتِهِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष **मुहम्मद इब्नुलहादी** رحمه الله ने "रिसालते लतीफ़ा" (स: 49) में नक़्ल की है और लिखा है कि इस की कोई सनद नहीं है या इस की अगर सनद है भी तो ऐसी सनद से नाक़िदीन हदीषे हुज्जत नहीं पकड़ते।

7 من وسَّعَ على عيالِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّعَ اللّٰهُ عليهِ سائرَ سنتِهِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمه الله ने अबू हुरैरा رضي الله عنه से **"तारीख़ुल इस्लाम"** (9/265) में नक़्ल की है और लिखा है कि **इस की सनद में सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह है जो ग़ैर मारूफ़ है।**

8 مَنْ وسَّعَ على عيالِهِ يومَ عاشوراءَ وسعَ اللهُ عليهِ سائرَ سنتِهِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष मुल्ला अली क़ारी رحمه الله ने "अल असरारुल मरफ़ूआ" (स: 452) में अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से नक़्ल की है। **और इसे ज़ईफ कहा है।**

9 مَن وسَّعَ على عيالِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّعَ اللّٰهُ عليهِ السَّنةَ كلَّها

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष अल्लामा ज़रक़ानी ﷫ ने “मुख़्तसरुल मक़ासिद” (1092) में इब्ने मसऊद, अबू सईद, जाबिर और अबू हुरैरा ﷡ से नक़्ल की है और **इस को सहीह कहा है।**

10 من وسع على عيالِه يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه فى سنتِه كلِّها

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष मुहम्मद जारुल्लाह सअदी ने “अल नवाफ़ेउल अतरा” (410) में अबू सईद खुदरी ﷜ से नक़्ल की है और **इस को ज़ईफ क़रार दिया है।**

11 من وَسَّعَ على عيالِه يومَ عاشوراءَ وَسَّعَ اللهُ عليه سائرَ سَنَتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “अस्सिलसिलतुज़्ज़ईफ़ा” (6824) में अबू हुरैरा, अबू सईद खुदरी, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और जाबिर ﷡ से नक़्ल की है और **इसे ज़ईफ कहा है।**

12 من وسع على عياله يوم عاشوراء أوسع الله عليه سنته

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ **यह हदीष इमाम अबी जा’फर मुहम्मद बिन उमरो बिन मूसा बिन हम्मादि अक़ीली** ﷫ **ने** “अल ज़ुअफ़ाअ् अल कबीर” (3/252) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷜ से रिवायत की है और कहा है के **इस सिलसिले में मुरसल रिवायत के सिवा कुछ साबित नहीं है।**

13 من وسَّعَ على عيالِه يومَ عاشوراء

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष इब्ने कैसरानी رحمہ اللہ ने "मारेफ़तुत्तज़किरा" (237) में नक़्ल की है और लिखा है कि इस रिवायत की सनद में **हैसम बिन शदाख़** है जो **इमाम अअ्मश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत नहीं ली जा सकती।**

14 من وسَّع على عيالِه يومَ عاشوراءَ أوسع اللهُ عليه سائرَ سنتِه

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمہ اللہ ने "तल्ख़ीसुल इललुल मुतनाहिया" (181) में अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से नक़्ल की है और कहा है कि **यह बातिल है। इसी जैसी और अहादीष भी रिवायत की गई हैं, लेकिन वह भी सहीह नहीं हैं।**

15 من وسَّعَ على عيالِه يومَ عاشوراءَ لم يزل في سعةٍ سائرَ سنتِه

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष **अल्लामा हैषमी** رحمہ اللہ ने "मजमऊ ज़ज़वाइद" (3/192) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद में 'हैसम बिन शदाख़' नाम का रावी बहुत ज़ियादा ज़ईफ है।**

→ **यह हदीष इब्ने जौज़ी** رحمہ اللہ **ने "मौज़ूआत इब्न अल जौज़ी" (2/568) में. अबू हुरैरा** رضی اللہ عنہ **से नक़्ल की है और लिखा है कि कोई अक़लमन्द इन्सान इस रिवायत के मौज़ूअ होने में शक नहीं कर सकता।**

16 من وسَّع على عيالِهِ في يومِ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه سائرَ السَّنةِ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम अहमद ﷺ ने “मसाइल अहमद रिवायतुल इस्हाक़” (1/136) **में ज़िक्र की है और कहा है कि इस की सनद में ज़ो’फ है।**

17 من وسَّعَ على عيالِهِ في يومِ عاشوراءَ وسَّعَ اللهُ عليه في سائرِ سَنَتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इब्ने हजर अस्कलानी ﷺ ने “अल अमालियुल मुतलका” (28) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से नक़्ल की है और लिखा है के **यह हदीष ग़रीब है, इस में ‘हैसम बिन शदाख़’ नाम का रावी है जिस के ज़ईफ होने पर सब का इत्तेफ़ाक़ है।**

18 مَنْ وسَّعَ على عيالِهِ في يومِ عاشوراءَ وسع اللهُ عليهِ السنةَ كلَّها

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ **यह हदीष मुल्ला अली क़ारी ﷺ ने “अल असरारुल मरफ़ूआत” (345) में ज़िक्र की है और कहा है के इस हदीष के बारे में कहा जाता है के इस की कोई अस्ल नहीं, या यह अस्ल में मौज़ूअ है।**

19 مَن وَسَّعَ على عِيَالِهِ فى النفقةِ يومَ عاشوراءَ، وَسَّعَ اللهُ عليه سائرَ سَنَتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ **यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “तख़रीज़ मिश्कातुल मसाबीह” (1868) में ज़िक्र की है और कहा है कि यह हदीष अपनी तमाम सनदों के साथ ज़ईफ है, इब्ने तैमिया ने इस पर मौज़ूअ होने का हुक्म लगाया है और उन्हों ने कोई अनोखी बात नहीं कही है।**

20 مَن وَسَّعَ على عِيَالِهِ فى يومِ عاشوراءَ، وَسَّعَ اللهُ عليه فى سَنَتِهِ كلِّها

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ **यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “ज़ईफुल जामेअ” (5873) में अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से नक़्ल की है और इस पर ज़ईफ होने का हुक्म लगाया है।**

21 من وسَّع على أهلِه يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه سائرَ سنتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ **यह हदीष इब्ने जौज़ी رحمه الله ने “मौज़ूआत इब्ने जौज़ी” (2/572) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से नक़्ल की है और इसे मौज़ूअ कहा है।**

22 من وسَّع على أهلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه سائرَ سُنَّتِهِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ **यह हदीष इब्ने तैमिया ने "मिन्हाजुल सुन्नाह" (8/149) में ज़िक्र की है और कहा है के यह हदीष नबी ﷺ पर एक झूठ है।**

23 أنه من وسَّعَ على أَهلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّعَ اللَّهُ عليهِ سائرَ السَّنةِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ **यह हदीष इब्ने तैमिया ने "मजमउल फ़तावा" (25/300) में ज़िक्र की है और कहा है के यह हदीष मौज़ूअ है और नबी ﷺ पर झूठ है।**

24 من وسَّع على أهلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليه سائرَ السَّنةِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ **यह हदीष इब्ने रजब رحمه الله ने "लताईफ़ुल मआरिफ़" (112) में नक़्ल की है और लिखा है के यह हदीष कई एक सनदों से बयान की जाती है लेकिन इन में से कोई एक भी सहीह नहीं है। हज़रत उमर رضي الله عنه के क़ौल के तौर पर भी इस को नक़्ल किया गया है लेकिन इस सनद में मजहूल और ग़ैर मारूफ़ रावी मौजूद है।**

25 من وسَّعَ على أهلِهِ فی يومِ عاشوراءَ وسَّعَ اللَّهُ عليهِ سنتَهُ كلَّها

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष अल्लामा हैसमी ﷫ ने “मजमऊज़्ज़वाइद” (3/192) में अबू सईद खुदरी ﷜ से नक़्ल की है और लिखा है के इस हदीष की सनद में मुहम्मद बिन इस्माइल जाफरी है जिसे अबू हातिम ﷫ ने मुन्किरुलहदीष कहा है ।

26 مـن وَسَّعَ على نفسِهِ وأهلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّعَ اللهُ عليهِ سائِرَ سنَتِهِ .قالَ جابرٌ :جرَّبْناه فوجدْنَاهُ كذلکَ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा ।” जाबिर ﷜ कहते हैं कि हम ने इस का तजुर्बा किया तो ऐसा ही पाया ।

→ यह हदीष इब्ने हज़र अस्कलानी ﷫ ने “लिसानुल मीज़ान” (6/338) में जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷜ से नक़्ल की है और **इस हदीष को सख़्त मुन्किर कहा है ।**

27 من وسَّعَ على أهلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّع اللهُ عليهِ سنَتَهُ كلَّها

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा ।”

→ यह हदीष इब्ने हजर अस्कलानी ﷫ ने “अल अमालीयुल मुताल्लिक़त” (28) में अबू सईद खुदरी ﷜ से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद में ‘अब्दुल्लाह बिन सलमा रबई’ है जिसे अबू ज़रआ ﷫ ने ज़ईफ कहा है, इस में दूसरा रावी मुहम्मद जाफ़री है जिसे अबू हातिम ﷫ ने ज़ईफ कहा है, इस हदीष के कई एक शवाहिद हैं ।**

28 مَن وَسَّعَ علـى نفسِه وأهلِه يومَ عاشوراءَ، وَسَّعَ اللهُ عليه سائرَ سَنَتِهِ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “तमामुल मनता” (410) में जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद मौज़ूअ है।**

29 إنَّهُ من وسَّعَ علَى أَهْلِهِ يومَ عاشوراءَ وسَّعَ اللَّهُ علَيهِ سائرَ سنتِهِ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “इस्लाहुल मसाजिद” (166) में अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से नक़्ल की है और कहा है के **यह हदीष सहीह नहीं है।**

30 من أوسَع على عيالِه وأهلِه يومَ عاشوراءَ أوسع اللهُ عليه سائرَ سنتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इब्ने अदी رحمه الله ने “अल कामिल फीज़्ज़ुअफ़ा” (7/416) में अबू हुरैरा رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद में मुहम्मद बिन ज़कवान है जिस की आम रिवायात मुन्फ़रिद और ग़रीब हैं, लेकिन इस के ज़ईफ होने के बावजूद इस की अहादीष लिखी जाती हैं।**

31 مـن كـان ذا جِـدَّةٍ فـوسَّعَ على عيالِه يومَ عاشوراءَ أوسعَ اللهُ عليه سَنَتَه

◆ **तर्जमा:** “जो तंग दस्त हो, फिर भी आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمه الله ने “मीज़ानुल ऐतिदाल” (4/312) में अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **यह हदीष बातिल है।**

32 من أوسعَ على عيالِه وأهلِه يومَ عاشوراءَ أوسعَ اللهُ عليهِ سائرَ سنتِه

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمه الله ने “मीज़ानुल ऐतिदाल” (93/543) में अबू हुरैरा رضي الله عنه से नक़्ल की है। और लिखा है के **इस की सनद में मुहम्मद बिन ज़कवान नाम का रावी है। इस के बाद उन्हों ने उन हजरात का ज़िक्र किया है जिन्हों ने इस पर जर्रह की है और यह भी लिखा है के इस रिवायत की सनद में सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह नाम का रावी ग़ैर मारूफ़** है।

33 مَـن أوسـعَ عـلـى عيـالِهِ وأهلِهِ يومَ عاشوراءَ؛ أوسعَ اللهُ عليهِ سائرَ سنَتِهِ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह ﷻ पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष अल्लामा अल्बानी ने “ज़ईफ़ुत्तरगीब” (617) में अबू हुरैरा رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **यह हदीष ज़ईफ है।**

34 من وسع على أهله وعياله يوم عاشوراء أوسع الله عليه سائر سنته

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम अक़ीली رحمه الله ने “अज़्ज़ुअफाउल कबीर” (4/65) में अबू हुरैरा رضي الله عنه से नक़्ल की है और कहा है के **यह हदीष महफ़ूज़ नहीं है।**

35 مَنْ وسَّعَ على أهلِهِ يوم عَاشُورَاءَ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की।”

→ यह हदीष अक़ीली رحمه الله ने “लिसानुल मीज़ान” (8/366) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **यह हदीष ग़ैर महफ़ूज़ है।**

36 مَن وسَّع على أهلِه في يومِ عاشوراءَ أوسَع اللهُ عليه سَنَتَه كلَّها

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।”

→ यह हदीष इमाम तबरानी رحمه الله ने “अल मुअजमुल औसत” (9/120) में अबू सईद खुदरी رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के यह हदीष अबू सईद खुदरी رضي الله عنه से सिर्फ़ इसी सनद से रिवायत की जाती है। इस सनद में मुहम्मद बिन जाफ़री नाम का रावी मुन्फ़रिद है।

37 مَنْ وسَّعَ على أهلِهِ يومَ عَاشُورَاءَ

◆ **तर्जमा:** “जिस ने आशूरा के दिन अपने अह्ल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की”

→ यह हदीष इब्ने कैसरानी رحمه الله ने "तज़किरतुल हुफ़्फ़ाज़" (362) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद में 'हैसम बिन शदाख़' नाम का रावी है जो अअ्मश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत लेना जायज़ नहीं है।**

38 من وسَّعَ على أهلِه يومَ عاشوراءَ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की।"

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمه الله ने "मीज़ानुल ऐतिदाल" (4/326) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से नक़्ल की है और लिखा है के **इस की सनद में 'हैसम बिन शदाख़' नाम का रावी है जो अअ्मश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत लेना जायज़ नहीं है।**

39 حديثٌ :من وسَّع على أهلِه يومَ عاشوراءَ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष इमाम ज़हबी رحمه الله ने "तरतीबुल मौज़ूआत" (182) में नक़्ल की है और कहा है के **इस की सनद में 'हैसम बिन शदाख़' साकितुल ऐतिबार है।**

40 من وسَّع على أهلِه يومَ عاشوراءَ.....

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा।"

→ यह हदीष शेख़ इब्ने बाज़ رحمه الله ने "अत्तोहफतुल करीमतु" (स:94) में नक़्ल की है और कहा है के **यह रिवायत कई एक सनदों से नक़्ल की गई है लेकिन कोई**

एक भी सहीह नहीं है । सय्यिदना उमर رضي الله عنه के क़ौल के तौर पर भी इस को नक़्ल किया गया है लेकिन इस की सनद में मजहूल रावी है जो ग़ैर मारूफ़ है ।

41 من وسَّع على أهلِه يومَ عاشوراء َأوسعَ اللهُ عليه سائرَ السنةِ

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा ।"

→ यह हदीष शेख़ इब्ने बाज़ رحمه الله ने "मजमूआ फ़तावा इब्ने बाज़" (26/251) में जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه से नक़्ल की है **और इस को मौज़ूअ कहा है ।**

42 من وسَّع على أهلِه في عاشوراء َوسَّع اللهُ عليه سائرَ سَنتِه

◆ **तर्जमा:** "जिस ने आशूरा के दिन अपने अहल व अयाल के लिए वुसअत इख़्तियार की, अल्लाह عزوجل पूरे साल उसे वुसअत में रखेगा ।"

→ यह हदीष इब्ने हिब्बान رحمه الله ने "अल मुजिर व-हीन" (2/446) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضي الله عنه से नक़्ल की है और कहा है के **'हैसम बिन शदाख़' शुअबा अअ्मश से वाही तबाही रिवायात बयान करता है, इस से हुज्जत लेना जायज़ नहीं है ।**

43 **अल्लाह ﷻ ने बनी इसराईल पर आशूरा का रोज़ा फर्ज़ किया था लिहाजा तुम भी रोज़ा रखो, और इस दिन अपने अहल व अयाल पर खाने पीने में वुसअत इख़्तियार करो क्यूँ कि यही वह दिन है जिस दिन अल्लाह ﷻ ने आदम عليه السلام की तौबा कुबूल की.....**

→ यह रिवायत "तरतीबुल मौज़ूआत" (स:182) में है । ज़हबी رحمه الله ने कहा है के अल्लाह ﷻ इस रिवायत को घड़ने वाले का बुरा करे, किस क़दर जहालत भरी बातें की हैं ।

इस सारी तेहक़ीक़ व तख़रीज़ से यह बात साबित होगी कि यह हदीष तमाम अह्ले इल्म के नज़दीक *बातिल* और *मौज़ूअ* है और इस की कोई हक़ीक़त नहीं है ।

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)
IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
Ahl-E-Sunnat
Reg.No. E/1432/Aravalli. GUJARAT, INDIA
Modasa, Aravalli, Gujarat (India)
Mo. 85110 21786